RAMAKRISHNA MISSION

SHILLONG

51st CULTURAL COMPETITION, 2025

Language: Hindi | Group: B | Class: VII - VIII

Date: 06.07.25 | Time: 3.00 P.M.

ओ स्वर्गीय स्वप्न!

– स्वामी विवेकानन्द

अच्छा या बुरा, समय बीतता हे-
कभी हर्षातिरेको से हृदय गद्‌गद्‌ होता हे
और कभी दुःखों के सागर लहराने लगते है,
यहीं, हम सभी सुख-दुःख से प्रभावित हो
कभी रोते और कभी हँसते हैं ।
हम अपने अपने रंग में होते है
और हे दृश्य अदल-बदलकर आते रहते हैं-
चाहे सुख चमके या दुःख बरसे।

ओ स्वप्न! ओ स्वर्गीय स्वप्न!
यह कुहर-जाल फैलाकर सब कुछ ढक दो,
इन तीखी रेखाओं को कुछ और मधुर करों
और पक्ष को जरा और कोमल कर दो ।

स्वप्न! केवल तुम्हींमें जादू है,
तुम्हारे स्पर्श से रेगिस्तान उपवन बनकर लहराते है,
कड़कती बिजलीयो का भीषण घोष
मधुर संगीत में बदल जाता है
और मुत्यु एक सुखद मुक्ति बनकर आती है।